RNI No. : UPHIN-2009/29369

डाक पंजीकरण :
जी/समा0 पत्र/पंजी0/बाँदा बी.एन.ए. 09/2012
बाँदा प्रधान डाकघर बाँदा
डाक प्रेषण दिनांक : 1 एवं 2

वार्षिक सदस्यता शुल्क 100/-

द्रविड़ भारत

सामाजिक परिवर्तन का मासिक पत्र

सितम्बर-2012 | वर्ष - 04 | अंक : 8 | मूल्य : 5/-

पेरियार की जरूरत

सम्पादकीय

गत 9 सितम्बर को एक दैनिक पत्र के प्रश्नोत्तर स्तम्भ में एक भद्र महिला ने बड़ा ही सामयिक प्रश्न उठाया था। उसने पूछा था – ब्राह्मणवाद विरोधी नेता पेरियार की प्रतिमा लगाने से भाजपा नेताओं को क्यो परेशानी है ? उसके प्रश्न का उत्तर देते हुये विद्वान उत्तरदाता ने लिखा था – भाजपा द्विजों की पार्टी है, अतः पेरियार जैसे प्रतीक उन्हें स्वीकार्य नहीं है, क्योंकि रामास्वामी नायकर पेरियार ने ब्राह्मण सत्ता के विनाश की वैचारिक आधारशिला तमिलनाडु में रखी थी। अतः भाजपा पेरियार का विरोध करे यह बात तो समझ में आती है, पर दलित पेरियार की प्रतिमा लगायें यह बात मुझे अंदर से झकझोर देती है। कार द्वारा मैंने पिछले दिनों मदुरै, इरोड, सलेम, धर्मपुरी, कांचीपुरम की 1800 कि.मी. की यात्रा की थी। इस पूरी यात्रा में दलितों द्वारा स्थापित डॉ. अंबेडकर की सैकड़ों प्रतिमायें देखने को मिली, पर पेरियार की एक भी नहीं। मेरे साथ के किसी कार्यकर्ता को यह याद नहीं था कि उसने किसी भी दलित गांव में पेरियार की प्रतिमा देखी हो। फिर उत्तर भारत के दलित पेरियार को लेकर इतनी उछल कूद क्यों करते हैं ?"

विद्वान उत्तरदाता ने पेरियार के विरूद्ध भाजपा के आक्रोश के कारणों को ठीक ही पहचाना है। यह सही है कि पेरियार द्वारा चलाये गये आंदोलनों के फलस्वरूप ब्राह्मण सत्ता का ऐसा विनाश हुआ कि राजा गोपालचारी के बाद जयललिता के रूप में ही किसी ब्राह्मण की ताजपोशी तमिलनाडु के मुख्यमंत्री के रूप में संभव हो सकी। वह भी इसलिये कि उन्होंने तमिलों के हृदयसम्राट अब्राह्मण नायक एम.जी. रामचन्द्रन की उत्कट प्रेमदीवानी के रूप में अपनी छवि स्थापित करने में सफलता पाई थी। अन्यथा एक तो ब्राह्मण ऊपर से गैरतमिल होने के कारण उनको वहां की राजनीति मे पांव जमाना मुश्किल होता। खैर, विद्वान लेखक ने सवर्णों के मनोविज्ञान को समझते हुये भाजपा के पेरियार विरोधी कारणों को ठीक से चिन्हित किया है, पर उ.प्र. के दलितों मे बसपा के प्रसार के बाद जो मानसिक परिवर्तन आया है, उसकी अनदेखी को लेकर क्यों इतनी उछलकूद कर रहे हैं।

बसपा के उत्थान के साथ साथ सहस्रों वर्षों के बाद आज भी दलितों में शासक बनने की उत्कृष्ट चाह तो पैदा हुई ही है, सांस्कृतिक स्तर पर उनकी सोच में भारी बदलाव आया है। इस बदलाव को आंकलन करते हुये दलित चिंतक चन्द्रभान प्रसाद ने 4 नवम्बर, 1999 को लिखा था – बसपा के गठन के बाद दलित समाज में सांस्कृतिक स्तर पर व्यापक परिवर्तन होने लगे। लोगों ने अपने घरों से हिन्दू देवी–देवताओ की मूर्तियों, चित्र आदि निकालकर नदी, तालाबों में डुबोना शुरू किया। उनके स्थान पर गौतम बुद्ध, ज्योतिबा फुले, डॉ. आंबेडकर और कांशीराम के चित्र लगाने लगे। इस तरह बसपा जहां चुनावो में एक राजनीतिक पार्टी लगती है, वहीं समान्य परिस्थितियों में एक सामाजिक व सांस्कृतिक आंदोलन लगती है। प्रधानतः बसपा द्वारा चलाये गये सामाजिक व सांस्कृतिक आंदोलनों के फलस्वरूप जो शिक्षित दलित आंबेडकरवाद के संस्पर्श में आये, उन्हें यह उपलब्धि हुई कि बहुजन समाज की दुर्दशा के मूल में है, दैविक दासत्व, जिसके चलते बहुजन वीभत्स संतोषबोध का शिकार होकर शोषणकारी वर्ण–व्यवस्था को सहर्ष ढोए जा रहे हैं। इस सत्योपालब्धि ने उनमें अपने नायक चयन का मापदंड ही बदल कर रख दिया। फलतः जिसने भी व्यक्त इतिहास में दैविक–दासत्व के स्वर्ग–नरक, तीर्थाटन, मंदिर–मूर्ति पूजा इत्यादि पर प्रहार किया, वहीं बहुजन नायक बनकर उभरा। इस क्रम में उन्होंने जाति–गैरजाति का भेद नहीं रखा। इसीलिये रैदास भगत, नंदनार, चोखामेला जैसे दलित संतों का स्थान उनके हृदय सिंहासन से नीचे उतरा, तो फुले, ललई सिंह यादव, रामस्वरूप वर्मा, महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन जैसे गैर दलित उनके महानायक बने। ऐसे नायकों की श्रेणी में दलितों ने गैरदलित पेरियार ई. व्ही. रामास्वामी को डॉ. आंबेडकर और फुले के बाद आधुनिक भारत के सर्वोच्च नायक के रूप में वरण किया है।

17 सितम्बर, 1879 को तमिलनाडु के इरोड में एक धनी व्यवसायी परिवार में जन्में ई.व्ही. रामास्वामी पेरियार ने न सिर्फ दैविक–गुलामी के स्त्रोतों पर कठोरतम प्रहार किया था, बल्कि मनुष्यों का जयगान एवं मानवता का ध्वजोत्तोलन करते हुये मानवीय शक्ति के ऊपर निर्भर रहकर भाग्य परिवर्तन का सपना दिखाया था। उन्होंने गहरी संवेदना के साथ मानवता को आह्वान करते हुये कहा था – ईश्वर नहीं है, अवश्य ही ईश्वर नहीं है, जिसने ईश्वर का आविष्कार किया वह मूर्ख था। जो ईश्वर का प्रचार करता है वह दुष्ट है। जो ईश्वर को पूजते हैं वे बर्बर हैं। व्यक्ति को मनुष्य बनने का ऐसा साहसिक व वैज्ञानिक आह्वान किया था पेरियार ने। पर पेरियार को ईश्वर भीरूओं ने कालापहाड़, नास्तिक, शैतान इत्यादि नामों से भूषित किया। लेकिन कोई भी विरोध उन्हें निरस्त न कर सका, उनके सपनों को साकार होने तक। उनके महान सपनो ने जन्म दिया, तमिलनाडु–मद्रास का नया नाम। समाज उन्नयन में उनके अवदानों के आभार से दबे उनके देशवासियों ने उन्हें थान्थाई शब्द से भूषित किया। थान्थाई का अर्थ होता है 'पिता'।

लेकिन पेरियार का सपना यूं ही पूरा नहीं हुआ था। जड़ समाजपतियों के प्रबल विरोध के मध्य भी उन्होंने मद्रास में सर्वत्र निद्राच्छन्न बच्चों–बूढ़ों, नर–नारियों को जगाने का अभियान चलाया। हर प्रगतिशील व्यक्ति, संगठन दिल खोलकर अर्थ, बल, समर्थन व बुद्धि से उनके अभियान में सहायता देने के लिये सामने आया। ब्राह्मणवाद के विरूद्ध अपने संग्राम को पूर्णयता प्रदान करने के लिये, एक समय उन्हें छोटे–बड़े 29 संगठनों के सभापति या सेक्रेटरी

RNI No. : UPHIN-2009/29369

संपादक : श्रीमती उमेश्वरी देवी

संरक्षक मण्डल : मा. रामदीन अहिरवार (महोबा), मा. राम अवतार चौधरी (इं. जल संस्थान महोबा), मा. भागीरथ अहिरवार (महोबा), मा. छविलाल वर्मा (चरखारी), मा. हरिनाथ राम (दिल्ली), श्रीमती वीना कुरील पत्नी राजेन्द्र कुरील, मो. : 9369243263 (मुख्य डाकघर, कानपुर)

राज्य ब्यूरो प्रमुख :

उत्तर प्रदेश : सुधीर धीमान (एडवोकेट)
15/76, सिविल लाइन्स कानपुर नगर (उ.प्र.),
मो. : 9305663082, 9889667885

ब्यूरो प्रमुख कानपुर मण्डल : मो. वसीक
कार्यालय : 88/358, चमनगंज, कानपुर,
मो. : 9956097256
फुरकान खान, मो. : 8081577681
सुनीता धीमान, मो. : 9450871741
राकेश समुन्द्रे, मो. : 9889727574

कानूनी सलाहकार : एड. रामप्रकाश अहिरवार, एड. यू के. यादव, मोती लाल वर्मा, एड. विजय बहादुर सिंह राजपूत, एड. रमाकान्त धुरिया, रामऔतार वर्मा, एड. सुशील कुमार, कानपुर

मध्य प्रदेश राज्य : पुष्पेन्द्र कुमार कार्यालय : ग्रा.पो. रामटौरिया, जिला छतरपुर मो. : 0993063520

छत्तीसगढ़ राज्य : दिलीप कुमार कोसले कार्यालय : सरस्वती शिक्षा मन्दिर कैम्पस, उड़ीसा कांक्रीट के पीछे रामेश्वर नगर, मनपुरी रायपुर मो. : 09424168170

कार्यालय : दिल्ली प्रदेश C/o अनिल कुमार C-260 हर्ष विहार, हरिनगर एक्सटेंशन पार्ट III, बदरपुर, नई दिल्ली - 44 मो. : 09540552317

संपादकीय/विज्ञापन प्रसार/पंजीकृत कार्यालय :
ग्रा. पो. रिवई (सुनैचा), जिला महोबा (उ.प्र.)
9005204074, 8756157631
E-mail : dravidbharat1@gmail.com

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी
श्रीमती उमेश्वरी देवी द्वारा ग्रा. पो. रिवई (सुनैचा) जिला महोबा से प्रकाशित व श्रेय ऑफसेट प्रा. लि.
109/406, नेहरू नगर, कानपुर, 84/1, B फत्तुल गंज, कानपुर से मुद्रित

प्रकाशित पत्रिका में प्रकाशित लेख, सामग्री, में संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। इसमें किसी भी प्रकार का दावा या विचार मान्य नहीं होगा। लेख के विवादित होने पर लेखक ही उत्तरदायी होगा समस्त विवादों का निपटारा महोबा न्यायालय में होगा पत्रिका का संपादन एवं संचालन पूर्णतयः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक है।

का दायित्व वहन करना पड़ा। ऐसे समय में उन्हें कांग्रेस में योगदान का न्यौता मिला और राष्ट्रीय कांग्रेस का वृहत्तर मंच से अपने संघर्ष को जारी रखने की उम्मीद में उन्होंने 1920 में कांग्रेस का न्यौता कबूल भी कर लिया। किन्तु थोड़े ही दिनों में उनका भ्रम टूट गया। सदियों से हिन्दू–आरक्षण–व्यवस्था में जो कोटि–कोटि अब्राह्मण शैक्षिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक अधिकारों से वंचित किये गये थे, उनके लिये उन्होनें, 1925 में कांचीपुरम में आयोजित कांग्रेस के राज्य सम्मेलन में, सरकारी नौकरियों इत्यादि में आरक्षण का प्रस्ताव पेश करना चाहा। किन्तु वह प्रस्ताव पेश करने नहीं दिया गया। इसके प्रतिवाद स्वरूप पेरियार ने परित्याग किया राष्ट्रीय कांग्रेस का और शुरू किया आत्म सम्मान (युक्तिवाद) का आंदोलन।

कांग्रेस का परित्याग करने के बाद उन्होंने जस्टिस पार्टी को अपना समर्थन दिया और अपने प्रबल प्रताप से जस्टिस पार्टी के तत्वाधान में 27 दिसम्बर, 1929 को जनसंख्या के अनुपात में दलित–पिछड़े अब्राह्मणों को, सरकारी नौकरियों में भागीदारी सुलभ करा दिया। परवर्तीकाल में लम्बे अर्से से समाज सुधार में अग्रणी जस्टिस पार्टी जब ब्राह्मणो के निरन्तर आघात से मृतपाय हुई तब 1938 में जनगण के दबाव मे आकर पेरियार को उसका अध्यक्ष पद स्वीकार करना पड़ा। उस समय आत्मसम्मान के आंदोलन के चलते वे जेल में थे। इस आत्म–सम्मान के आंदोलन से जस्टिस पार्टी ने शेष पर्यन्त द्रविड़ कझगम आन्दोलन व संस्था का रूप ले लिया। उन्होंने अपने अनुगामियों और द्रविड़ कझगम के सदस्यों को साथ लेकर आत्मसम्मान का जो प्रबल आंदोलन चलाया जो मद्रास पर्यन्त पूरे तमिलनाडु में परिवर्तित हुआ। द्रविड़ मुनेत्र कझगम पार्टी लाई अब्राह्मणें के लिये राजनैतिक शक्ति व स्वतंत्रता। पूरा हुआ वहा ब्राह्मण सत्ता का विनाश का अध्याय।

क्या था पेरियार का वह आत्मसम्मान आंदोलन जिसने सत्ता में आमूल परिवर्तन करते हुये समाज के दबे कुचले लोगों को ऊपर उठा दिया ?

पेरियार ने घोषणा की थी कि उनके आत्मसम्मान के आंदोलन का उद्देश्य वर्ण व्यवस्था : एक वितरण व्यवस्था। एक ऐसे समाज की प्रतिष्ठा करना है, जो होगा श्रेणीहीन, जातिहीन जिसमें वास करेगा साम्य अधिकार, अन्धविश्वास व सम्पूर्ण सामाजिक व्याधि मुक्त एक समाज। इस समाज का लक्ष्य होगा पुरुषों के ही समान नारी अधिकार की प्रतिष्ठा करना। नारियों का संपत्ति अधिकार, नारी शिक्षा एवं विधवा विवाह की शुरूआत करना। इस संबंध में पिछड़ी जाति आंदोलन के प्रमुख स्तम्भ आर. एल. चंदापुरी की यह टिप्पणी ध्यान देने योग्य है – आत्म–सम्मान के आंदोलन की पूर्ण सफलता के लिये दलितों, पिछड़ी जातियों को अपने हृदय से अंधविश्वास को दूर करना आवश्यक था। ब्राह्मण पुरोहित देवी–देवताओं की मूर्तियाँ बनवाते हैं और अपने स्वार्थ के लिये उसकी पूजा करते और करवाते हैं। इस प्रकार वे गैर–ब्राह्मणों को बराबर ठगते और शोषण करते हैं। मिटिटयों और पत्थरों की मूर्तियों की पूजा से ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती है और न उनका कोई भला हो सकता है। ऐसी मूर्तियां तो एक पल में तोड़ फोड़ दी जाती है। मूर्तियों की पूजा केवल ब्राह्मणों के खाने–पीने के रोजगार है। इसलिये आंदोलन ने तमिलनाडु राज्य भर में देवी–देवताओं की मूर्तियां तोड़ने का आंदोलन चलाया और तमिलों के हृदय से अन्धविश्वास को दूर करने का प्रयत्न किया। इस प्रकार सांस्कृतिक कार्यक्रमों के जरिये उन्होंने द्रविड़ों को आंदोलित कर दिया और उनमें आत्म–सम्मान भर दिया।

लोगों के मन से अन्धविश्वाास व ईश्वर भय दूर करने के उन्होंने खुद पहलकदमी की। उन्होंने शास्त्रानुसार भयंकर व अशुभ लगन में अपने लड़के का ब्याह रचाया, जिसमें पुरोहित का दायित्व विधवा ने निभाया था और उसकी शादी में शहनाई की जगह शोक–संगीत बजवाया था। वह तो एक अद्‌भुत दृश्य था जिसे उस दिन सड़क पर दोनो और खड़ी जनता ने आंखे फाड़कर देखा था – ट्रक पर सवार पेरियार, उसपर रखी गई राम–सीता, कृष्ण–राधा, शिव की मूर्तियों पर झाड़ू और जूतों की बरसात करते हुये जनता को ललकार रहे थे – देखो! इन देवी–देवताओं में कोई शक्ति नहीं है, यह मेरा कुछ नहीं बिगाड़ पा रहे हैं। सचमुच पेरियार ने अपने व्यावहारिक जीवन द्वारा प्रमाणित कर दिया कि ईश्वर–फीश्वर जैसी कोई सत्ता नहीं है। यह प्रमाणित कर उन्हें भारी तृप्ति हुई थी। जिसकी अभिव्यक्ति उन्होंने अपने 93वें जन्म दिन विदूतलै पत्र के विशेषांक में लेख लिखकर किया था। उन्होंने लिखा था –

मैं अब भी एक स्वंयसेवक हूँ तथा समताधारित समाज की स्थापना के लिये कार्य कर रहा हूँ जिसका प्रयोजन है जाति व्यवस्था पर आधारित समाज को सर्वथा समाप्त कर देना। अपने प्रचार द्वारा मैं अपनी इस घोषणा में सफल हो गया हूँ कि ईश्वर नहीं है। मेरे इस विचार को लोग स्पष्टरूप से समझ सके, इसके लिये मैंने अपने अनुयायियों को निर्देश दिया है कि वे ईश्वर को चप्पलों से पीटे इस सम्बन्ध में यहां तक जा चुका हूँ कि यदि ईश्वर रहता तो क्या वह मुझे इतनी लम्बी आयु तक जीवित रखता ? यह सत्य है कि मेरे प्रयास का प्रथम प्रयोजन जाति प्रथा को समूल नष्ट करना है। किन्तु इस जाति प्रथा के उच्छेदन के प्रयत्न ने मुझसे इस देश से ईश्वर, धर्म, शास्त्र और ब्राह्मणवाद को समाप्त करने की बात भी कहलवा दी है। जाति–प्रथा तभी समाप्त होगी जब उक्त चारों समाप्त होंगे। हो सकता है हम आधुनिक युग की संगति में भले ही जाति समाप्त करने का समर्थन करें किन्तु ईश्वर, धर्म, शास्त्र और ब्राह्मणवाद इन चार की समाप्ति की बात करने से खौफ खायेंगे। जातियां तब तक समाप्त नहीं होगी जब तक हम स्वतंत्र चिंतन और यथेष्ठ ज्ञान नहीं अर्जित कर लेते हें जाति–प्रथा ने हममें मूर्खता का भाव उत्पन्न किया है तथा हमारी गुलामी को मनोवृत्ति का पोषण किया है। उक्त चारों दुश्शक्तियों ने जाति–प्रथा बरकरार रखने को अपना परम कर्तव्य समझा है।

यदि कोई व्यक्ति ईमानदारी से कहता है कि जातियां समाप्त होनी चाहिये। तो उससे यह कहने के लिये तैयार रहना चाहिये कि उक्त चारों अर्थात् ईश्वर, धर्म, शास्त्र और ब्राह्मणवाद को सबसे पहले समाप्त होना चाहिये। मैं यह देखकर परमानन्द और उत्साह का अनुभव कर रहा हूं कि वे लोग मेरा अनुगमन करने तथा मेरी बात सुनने के लिये तैयार हैं। सलेम के सम्मेलन ने मेरी चिन्तन पद्धति को और सुदृढ़ किया है। इससे मेरा पथ प्रशस्त हुआ है। मेरी जाति–प्रथा को समाप्त करने के विचार का कोई विरोधी नहीं है। ऐसी परिस्थिति में लोगों से मेरा अनुरोध है कि वे न तो मंदिर जायें, न धार्मिक त्योहारों में भाग लें, न धार्मिक उत्सव मनायें और न अपने मस्तक पर टीका लगायें।

देवरिया जिले के दिवंगत संत देवरहा बाबा कहा करते थे कि जो ईश्वर विरोधी व नास्तिक होगा, वह तो कोई ज्ञानी ही हो सकता है। व्यवसायी पिता वेंकटप्पा नायकर और माता चित्राबाई की संतान ई. व्ही. कृष्णस्वामी के अनुज ई.व्ही. रामास्वामी नायकर, जो बाद में थान्थाई पेरियार कहलाये, एक यथार्थ ज्ञानी के रूप में उत्तीर्ण हुये थे। लेकिन उन्होंने स्कूल कालेजों में पढ़कर ज्ञान नहीं अर्जित किया थां वायकोम के वीर पेरियार तो मात्र दस वर्ष की उम्र में यह कहकर जिस स्कूल में उनके अस्पृश्य सखाओ का प्रवेश निषिद्ध है, वहां नही पढ़ेगे – विद्यालयों से अलविदा ले ली थी। किन्तु निर्मल मन और तीव्र युक्ति के सहारे उन्होंने संसार से ज्ञान का आहरण किया था। उनका चक्षु और कान था खुला और विचार था मुक्त। पुस्तकों से असीम लगाव तो था ही उन्नत सभ्यता के पीठ स्थानों से ज्ञान का आहरण करने के लिये 1931 के दिसम्बर में उन्होनें विदेश यात्रा भी की थी। मानवता के प्रति असीम वेदना सत्य के प्रति अपार निष्ठा और अन्याय के प्रति कठोर घृणा के कारण जिस व्यक्ति ने सबसे बड़ी चुनौती बार–बार पेश की, वह स्वस्थ व सबल देह लिये, 24 दिसम्बर 1973 की सुबह सात बजकर बाइस मिनट तक, 94 वर्ष 3 माह तक जीवित रहा। यूनेस्को ने उन्हें आत्म सम्मान का आंदोलन और द्रविड़ कझगम के संचालन के उपलक्ष्य में दक्षिण पूर्व एशिया का सुकरात कहकर सम्मानित किया था। यूनेस्को द्वारा भेंट की गई शील्ड पर लिखा था – पेरियार, नये जमाने का पैगम्बर, दक्षिण पूर्व एशिया का सुकरात, समाज सुधार के जनक और अज्ञानता, अन्धविश्वास निरर्थक प्रथाओं का यम।

पेरियार विरोधी सवाल खड़ा कर सकते हैं कि आत्म सम्मान आंदोलन के फलस्वरूप तमिलनाडु सहित दक्षिण–भारत के अन्य राज्यों में ब्राह्मण सत्ता का विनाश और पिछड़ी जातियों का प्रभुत्व कायम हुआ पर दलितों की स्थिति तो पूर्ववत् है ? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि यदि भारत में साम्यवाद की विफलता और रूस में पूंजीवाद के पैर पसारने के लिये महानतम मानवतवादी कार्ल मार्क्स नहीं है तो दक्षिण भारत में दलितों की दुर्दशा के लिये कहीं से भी पेरियार को जिम्मेदार नही ठहराया जा सकता। जिस देश मे चार–वर्ण से विकसित दस हजार जातियो का परस्पर संपर्क घृणा और द्वेष पर आधारित हो जिस देश में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्रातिशूद्र अपने ही निम्नतर अवस्थान में पड़े भाइयों को घृणा करने देखने के अभ्यस्त हों वहां उच्चतर अवस्थान वाली जातियों द्वारा दलितों का दलन स्वाभाविक ही है। इस व्याधि का एक ही निराकरण है कि सुदूर भविष्य तक पेरियार का आत्म सम्मान आंदोलन जारी रखा जाये। मायावती जी इस हकीकत को समझती है। इसलिये पेरियार की मूर्ति आर्यवर्त के हृदयस्थल में स्थापित करना चाहती हैं जिससे भाजपा को परेशानी हो रही है। उसकी परेशानी का सबब यह है कि यदि आत्मसम्मान का आंदोलन आंधी का रूप ले लेता है तो उसका वह आधार ही खिसक जायेगा जिससे, हिन्दुओ की धार्मिक चेतना का राजनीतिकरण कर, वह सवर्णों को 'हिन्दू' के नाम पर चुनाव जितवाने की गतिविधियां चला रही हैं। पेरियार के प्रचारस्वरूप वह जाति चेतना के राजनीतिकरण का मुकाबला करने की ताकत ही खो देगी, इसलिये परेशान है। ऐसे में भाजपा को राष्ट्र के लिये सबसे बड़ा खतरा मानने वाले धर्मनिरपेक्षतावादियों की कशमकश का कारण समझ में नहीं आता है। वे क्यों नहीं आत्मसम्मान आंदोलन के प्रेरणा पेरियार की मूर्ति स्थापित करवाने के लिये सामने आते हैं ? क्या वे जाति–व्यवस्था के समर्थक हैं ? अगर वे समझते हैं कि पेरियार को जन–जन तक पहुंचाये बिना, महज धर्मनिरपेक्षता के उपदेश के सहारे, भाजपा का खात्मा कर देंगे तो वे सचमुच मुंगेरीलाल के हसीन सपने देख रहे हैं।

जनसत्ता एक्सप्रेस
17 सितम्बर 2002
साभार : वर्ण व्यवस्था एक वितरण व्यवस्था
एच.एल. दुसाध
पृष्ठ सं. 151 से 156 तक

बाबा साहेब का अधूरा सपना

बौद्ध भारत मे मृत्यावस्था में पहुंची और बौद्धोत्तर भारत मे पुनः यौवन लाभकर अप्रतिरोध्य बनी जाति/वर्ण व्यवस्था के खिलाफ हिंदू समाज द्वारा कोई सबल आंदोलन ही नहीं हुआ। वैसे फादर विलियम के और उनके भ्राताओं की प्रेरणा से कुछ महामानवो ने इस व्यवस्था के सहायक उपायों–सती प्रथा, विधवा प्रथा और अछूत प्रथा इत्यादि के उन्मूलन में अच्छी–खासी ऊर्जा व्यय की। मगर अपनी जातिवादी मानसिकता और हिंदू–धर्म के ध्वंस के भय के कारण वे इसके मूलाधार पर आघात न कर सके। लेकिन हिंदुओं के विपरीत दलित समाज पिछले सहस्त्राधिक वर्षों से निरंतर इसके विरूद्ध आंदोलन करता रहा है। पर इसमे तीव्रता कांशीराम के उद्य के बाद ही आई है। उनके पे बैक टू दी सोसाइटी (समाज को लौटाने) के आह्वान में प्रेरित होकर, बहुत भारी संख्या में पढ़े–लिखे, आर्थिक रूप से सक्षम दलित इसमें शिरकत कर रहे हैं।

आज जिस जाति व्यवस्था को राजनाथ सिंह जैसे सवर्ण नेता मानवता के लिये मीठा जहर करार दे रहे हैं और जिसमें समाज को मुक्त कराने के लिये असंख्य दलित मुस्तैद दिख रहे हैं उसकी सबसे बड़ी बुराई यह है कि इसने समाज में असमान वितरण की स्थिति को जन्म दिया है। इसके कारण देश की संपदा व संसाधनों का असमान वितरण हजारों साल से कायम रहा है। यह असमान वितरण भी मात्र ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्यों के मध्य ही हुआ हैं। कर्म–संकरता अर्थात पेशों की विचलनशीलता की निषेधाज्ञा के कारण हिंदू–वर्ण–व्यवस्था को एक आरक्षण व्यवस्था का रूप दे दिया गया जिसमें शिक्षा, भूस्वामित्व, शासन–प्रशासन, व्यवसाय–वाणिज्य के अधिकार मात्र तीन वर्णों के मध्य ही वितरित हुये पर जो वर्ण–व्यवस्था अर्थात् हिंदू आरक्षण व्यवस्था–ब्राह्मण–क्षत्रिय–वैश्यों के लिये असमान वितरण की व्यवस्था रही, वह शूद्रातिशूद्रों के लिये पूरी तरह वितरणहीनता की व्यवस्था रही। इनके लिये हिंदू आरक्षण–व्यवस्था में मात्र कर्तव्य वितरित हुये। संपदा व सम्मानजनक लाभकारी पेशों का अधिकार बिल्कुल नहीं। पर कालांतर मे सछूत शूद्र (पिछड़े) भी इस वितरणहीनता से कुछ हद तक निजात पा गये। जिन जाति/वर्णों के मध्य देश की समस्त संपदा व उच्चमान के पेशों का वितरण हुआ था, उनकी सोशल पुलिस का कार्य करने के कारण इन्हें भी कुछ वितरित कर दिया गया। किंतु दलित (अछूत–आदिवासी) भारतीय समाज में बहिष्कृत व दूरवर्ती रहने के कारण, सदियों से वितरणहीनता की खाई में फंसे रहे।

दलितों को वितरणहीनता से निजात दिलाने की पहल अंग्रेजों ने की पर उल्लेखनीय राहत डॉ. अंबेडकर ने कानून बनाकर दिलाई। लेकिन संविधान निर्माण के समय बाबा साहेब भारत के सबसे असहाय स्टेट्मैन थे। वे चाहकर भी सर्वत्र प्रतिनिधित्व का प्रावधान न कर सके। यदि उनके पीछे, सिर्फ उनकी विद्वता न होकर संगठित राजनीतिक शक्ति होती, वे सेना, न्यायपालिका, मीडिया निजी संस्थानों इत्यादि मे भी दलितों की भागीदारी सुनिश्चित कर देते। यही नहीं स्टेट्स एण्ड मायनॉरिटीज में उन्होंने भूमि वितरण का जो सपना देखा था उसे भी पूरा कर देते। लेकिन राजनीतिक शक्ति के अभाव मे अपने लोगों को वितरणहीनता से पूरी तरह मुक्ति दिलाने का उनका सपना अधूरा रहा। उनके इसी अधूरे सपने को पूरा करने का लक्ष्य बनाया है बसपाध्यक्ष ने। लेकिन अफसोस, अधिकतर दलित बुद्धिजीवियों ने जाति तोड़ो और धर्मान्तरण को ही डॉ. अंबेडकर का अधूरा सपना समझ लिया और इसे पूरा करने में जुट गये। पर खुशी की बात है कि संपदा व संसाधनों के नन–डिस्ट्रीब्यूशन से निजात दिलाने का 21 मुक्कमल सूत्र हाल ही में चंद्रभान प्रसाद और उनके साथियों ने तैयार कर दिया है।

भारतीय समाज के फलस्वरूप और उसकी समस्याओं के गहन–अध्ययन के आधार पर कांशीराम ने बहुत पहले यह सत्योपलब्धि कर ली थी कि वर्ण–व्यवस्था के कारण हिंदुओं में लोकतांत्रिक चरित्र इतना विकसित नहीं हो पाया है कि वे लोकतांत्रिक नियमों का पालन करते हुये दलितों को सर्वत्र प्रतिनिधित्व देकर वितरणहीनता से निजात दिला दें। उन्होंने यह भी पाया था कि सती प्रथा, विधवा विवाह, गंगा प्रवाह इत्यादि अनेकों अमानवीय प्रथाओं से चिपके हिंदुओं से भारतीय समाज को निजात सिर्फ कानून बनाकर दिलाया गया है। ऐसे में वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे बिना न रह सके कि सिर्फ राज्यादेश के सहारे ही हिंदुओं के कब्जे से दलितो का अधिकार छीना जा सकता है। इसके लिये दलितों की जाति चेतना का राजनीतिकरण करने के लिये आर्य–अनार्य सिद्धांत पे बैक टू दी सोसाइटी के दर्शन के साथ डॉ. अंबेडकर, फुले, पेरियार, शाहू जी के विचारों के व्यापक प्रचार का अभियान वे आज भी चला रहे हैं। इसका लाभ उनकी प्रयोगशाला उ.प्र. में मिल रहा है जहां की जनता अंबेडकर के अधूरे सपने को पूरा करने की उम्मीद में उत्तरोत्तर बसपा को मजबूत किये जा रही है।

दलितों को भागीदारी दिलाने के लिये किसी भी दल के साथ मिलकर सरकार बनाने में मायावती की बसपा को कोई गुरेज नहीं है। बसपा सभी दलों को मनुवादी मानती है। मनुवादी का मतलब बसपा के लिये यह है कि जो भी व्यक्ति या दल हिंदू–धर्म–संस्कृति के प्रति श्रद्धाशील है, मनुवादी हैं। इस लिहाज से अडवाणी और मुलायम सिंह यादव में उसे इतना ही फर्क नजर आता है जितना फर्क जय श्रीराम और जयश्री कृष्ण में है। भाजपा अगर काला नाग है तो दूसरे दल हरे सांप है, ऐसा बसपा का मानना हैं। चूंकि बसपा के लिये सभी दल मनुवादी है। इसलिये मनुवादी की भीड़ में समयानुसार उसे वही दल पसन्द है जिसके साथ मिलकर वह सत्ता में भागीदारी कर बेहतर वह सत्ता में भागीदारी कर बेहतर इस्तेमाल कर सकें। इसी योजना के तहत मायावती दो बार भाजपा के साथ की सत्ता की भागीदारी कर दलितों के लिये ऐतिहासिक कार्य कर चुकी है। जब तीसरी बार उसकी पुनरावृत्ति की संभावना उज्जवल हो गई है जिसे देखकर डॉ. तुलसीराम सहित कई दलित व गरैदलित बुद्धिजीवियों में बौखलाहट पैदा हो गई है। इस बौखलाहट में दलितों को वितरणहीनता से मुक्ति दिलाने के लिये बसपा के सत्ता गणित में उन्हें वैदिक–गणित नजर आने लगा है। इस बौखलाहट में उन्हें यह भी याद नहीं आ रहा है क्यो डॉ. अंबेडकर ने एक जमाने में हिन्दुस्तानियों के सबसे बड़े दुश्मन अंग्रेजों और अपनी चरम विरोधी कांग्रेस के साथ मिलकर सत्ता में साझेदारी की थी ? सारा कुछ अवसर के उपयोग से प्रेरित था। अवसर का उपयोग करने के लिये ही 1977 में इंदिरा गांधी की तानाशाही और 1989 में राजीव गांधी के कथित भ्रष्टाचार के नाम पर जयप्रकाश नारायण, राजनारायण ज्योति बसु, वी.पी. सिंह, चरण सिंह, गुजराल, देवगौड़ा, मुलायम सिंह यादव, लालू यादव, देवी लाल वगैरह ने 1996 के पूर्व ही संघ परिवार का राजनैतिक अछूतपन दूर कर दिया था। इस बौखलाहट में वे इस बात का भी ध्यान नहीं दे रहे हैं कि क्यों संघ परिवार मायावती के साथ सत्ता की भागीदारी करने से घबरा रहा है और भाजपाई क्यों कह रहे हैं कि दो बार साथ मिलकर सरकार बनाने में उन्हें नुकसान उठाना पड़ा है और तीसरी बार मेलजोल करने पर रहा–सहा जनाधार भी खत्म हो जायेगा ?

वास्तव में मायावती फोबिया से इन बुद्धिजीवियों का मानसिक संतुलन इस कदर गड़बड़ा गया है कि उन्हें उपरोक्त बातों के अतिरिक्त मायाराज में दलितों में आये ऐतिहासिक भावांतरण का महत्व भी याद नहीं है। अन्यथा वे दलित हितैषी होने के नाते उनके गद्दीनशीन होने की बेसब्री से इंतजार करते। लेकिन उन्हें भले ही याद न हो, पर उ.प्र. के दलितों को तो उस भावांतरण का एहसास था, तभी तो उन्होंने बसपा को अभूतपूर्व समर्थन देकर पुनः हुक्मरान बनने का अवसर मुहैय्या कराया है। मायाराज मे हुये भावांतरण से सहस्त्रों वर्षों की गुलाम जातियों में न सिर्फ शासक बनने की भावना पैदा हुई थी बल्कि सदियो से नतमस्तक रहकर मार खाने वालों में पलट कर वार करने का जज्बा पैदा हुआ था। इस भावांतरण से उद्भूत हुई परिस्थितियों का मुकाबला करने के लिये ही तो 1997 के जून में मुलायम सिंह यादव के नेतृत्व में रामविलास पासवान, देवगौड़ा इत्यादि तीसरे मोर्चे के नेताओं को मायावती के खिलाफ हल्लाबोल रैली निकालनी पड़ी थी। रैली में शामिल नेताओं ने तब हल्ला मचाया था कि दलित सरकारी संरक्षण का लाभ उठाकर अत्याचार कर रहे हैं। एक भूतपूर्व प्रधानमंत्री ने दलितों द्वारा किये जा रहे अत्याचार के विरूद्ध आमरण अनशन की धमकी दे डाली थी। उन्हीं दिनों उ.प्र. के एक भूतपूर्व ब्राह्मण मुख्यमंत्री ने विधानसभा के सामने बाकायदा अनशन भी किया था। उनका भी अभियोग था दलित हमारे लोगों को सता रहे हैं। मायावती के राज में सदियों से अत्याचार सहने वाले दलितों में प्रतिरोध करने का जो जज्बा पैदा हुआ था, इसका आकलन करने के लिये मायावती विरोधियों को किसी समाजशास्त्री का शरणापन्न होना चाहिये।

दलितों में यह ऐतिहासिक भावांतरण यू ही नहीं हुआ। इसमे तो कांशी–माया द्वारा लंबे समय से जारी सामाजिक व सांस्कृतिक आंदोलनों की बहुत बड़ी भूमिका रही है, जिसका प्रतिबिम्बन प्रसिद्ध दलित बुद्धिजीवी चंद्रभान प्रसाद के 4 नवंबर 1999 को राष्ट्रीय सहारा में छपे आलेख में इन शब्दों में हुआ था – बसपा के गठन के बाद दलित समाज में व्यापक परिवर्तन आने लगे। लोगों ने हिन्दू देवी–देवताओं की मूर्तियां घरों से निकालकर नदी–तालाब मे डुबोना शुरू कर दिया। उनके स्थान पर गौतम बुद्ध, फुले, पेरियार, आंबेडकर, कांशीराम के चित्र लगाने लगे। इस तरह चुनावों में बसपा जहां एक राजनैतिक पार्टी लगती है, वही सामान्य परिस्थितियों में सामाजिक सांस्कृतिक आंदोलन का दर्पण लगती है।

वास्तव में बामसेफ के जमाने से कांशी–माया ने फुले, पेरियार, शाहूजी और डॉ. अंबेडकर इत्यादि के दर्शन का प्रचार कर हिंदू धर्म संस्कृति के विरूद्ध जो अभियान चलाया, वह बेनजीर है। मायाराज में यह अभियान और ऊँचाई पर पहुंचा था जिससे भारी संख्या में लोग हिंदुइज्म से मुक्त हुये थे। हिदुंइज्म से मुक्त हुये ऐसे ही लोग बौद्ध–धर्म में दीक्षित कराकर कुछ दलित अधिकारी खुद को तीसमारखाँ समझते हैं। सचमुच में इनमें कुवत है तो पासी, खटिक, दुसाध, गोड़ इत्यादि अनुसूचित जातियो सहित पिछड़ों में, कुछ लाख के बजाय मात्र कुछ हजार का धर्मान्तरित करा का दिखा दें। मेरा दावा है कि वे बुरी तरह विफल रहेंगे क्योंकि इन जातियों को बसपा हिदुंइज्म से मुक्त करने में सफल नहीं हुई है। आज संघ परिवार मायावती के साथ मिलकर सरकार बनाने में इसलिये भी कतरा रहे है क्योंकि उसे डर है कि मायावती हिंदू धर्म संस्कृति की जड़े काटने का

काम वहां से फिर शुरू कर सकती है, जहां से छोड़ गई थी। इसके बावजूद जिन्हें बसपा के वर्ण–विरोधी सत्ता–गणित में वैदिक गणित नजर आ रहा है, उन्हें कांशीराम द्वारा शुरू किये गये जाति चेतना के राजनीतिकरण के परिणामों पर नजर दौड़ानी चाहिये। यह स्वाधीनोत्तर भारत की एकमात्र राजनीतिक हस्ती कांशीराम ही हैं जिन्होंने संघ संस्थापक डॉ. हेडगेवार की चाल को समझ कर सही काट पैदा की है।

डॉ. हेडगेबार ने 1925 में संघ की स्थापना यह सोचकर ही की थी कि यदि हिंदू धर्म संस्कृति के नाम पर आंदोलन खड़ा कर हिंदुओं का ध्रुवीकरण कराया जायेगा तो नेतृत्व ब्राह्मणों के हाथ मे जायेगा ही। उनकी इस साजिश को समझकर ही कांशीराम विगत दो दशकों से वर्ण–व्यवस्था में वंचित जातियों के ध्रुवीकरण के फार्मूले पर काम कर रहे हैं। उनकी योजना है जब वंचित जातियों का ध्रुवीकरण किया जायेगा तो बहुजन समाज बनेगा और नेतृत्व दलित–पिछड़े अल्पसंख्यकों के हाथ में आयेगा ही आयेगा। इसके लिये उन्होंने दलितों की जाति चेतना का राजनीतिकरण किया तो धीरे–धीरे पिछड़े अल्पसंख्यकों तक प्रसारित हो गई हैं। जाति चेतना के राजनीतिकरण किया जो धीरे–धीरे पिछड़े अल्पसंख्यकों तक प्रसारित हो गई है। जाति चेतना के राजनीतिकरण का ही नतीजा है कि पिछले दिनों चार राज्यों के विधानसभा चुनावों में कुल 650 सीटों में से भाजपा मात्र 114 सीट ही जीत सकी जिसमें ब्राह्मणों की संख्या नाममात्र है। यह बसपा के जाति चेतना के राजनीतिकरण का ही चमत्कार है कि 1952 के 5.45 प्रतिशत की जगह 1998 मे पिछड़े सांसदों का प्रतिशत 34.67 तक पहुंच गया। जाहिर है कि यह सवर्णों की घटती संख्या का सूचक है। जिस संघ परिवार से डॉ. तुलसीराम जैसे लोग सहमे हुये है, ब्राह्मणों द्वारा ब्राह्मणों के हित में स्थापित उस परिवार में ब्राह्मण लुप्तप्राय हो गए है। अटल जी, के. एस. सुदर्शन को छोड़कर नरेंद्र मोदी, बंगारू लक्ष्मण, उमा भारती, ऋतंभरा, गिरिराज किशोर इत्यादि रामभक्त गैर ब्राह्मण है। यह सब कांशीराम की जाति चेतना के राजनीतिकरण का चमत्कार है। इस चमत्कार के कारण यह साफ दिखाई पड़ रहा है कि आगामी एक दशक में सवर्णों को अपना वजूद बचाये रखने के लिये या तो दलित–पिछड़ों के नेतृत्व में चलना होगा या गुजरात जैसे दंगों को अंजाम देकर विशाल हिंदू समाज बनाने के लिये राष्ट्र को शर्मसार करना होगा। उ.प्र. के चालाक सवर्ण इसलिये किसी भी कीमत पर मायावती के नेतृत्व में चलने की प्रतियोगिता कर रहे हैं। बसपा के सत्ता में आने से सवर्ण वर्चस्व और कमजोर होगा, इसलिये कुछ विशिष्ट बुद्धिजीवियों को छोड़कर पूरे देश का दलित मायावती को मुख्यमंत्री की कुर्सी पर फिर बैठने की राह देख रहा है।

दरअसल जिन्हें मायावती की सत्ता के गणित में वैदिक गणित नजर आ रहा है, वे पढ़े–लिखे, खाते–पीते ऐसे दलितों की जमात से आते हैं जो वर्ण–व्यवस्था जनित सामजिक बुराई को दूर करने में समाजिक चेतना के प्रसार को प्रधानता देते हैं। उन्हें लगता है सत्ता के लिये संघर्ष सामाजिक चेतना के प्रसार में बाधक है। चूंकि मायावती ने सिर्फ संघर्ष सत्ता संघर्ष की प्रतीक हैं बल्कि 25 करोड़ दलित जनशक्ति को ही विराट राजनैतिक शक्ति में तब्दील करने पर आमाद है। इसलिये वे बराबर उनकी आलोचना मे मुखर रहते हैं। इन्हें यह नहीं मालूम कि वर्ण–व्यवस्था की बुराईयों के खिलाफ रैदास, कबीर जैसे संतों से लेकर राममोहन राय, विद्यासागर, महात्मा गांधी जैसे महापुरुष सामाजिक चेतना का प्रसार करते–करते मर खप गये, पर दलितों की स्थिति अपरिवर्तित रही। आज इन्हीं महापुरुषों का अनुसरण करते हुये, दलितों का सक्षम तब का सामाजिक चेतना के प्रसार में जुट गया है। इन्हें यह नहीं मालूम वे जिन सामाजिक बुराईयों के खिलाफ लड़ रहे हैं वे वर्ण–व्यवस्था की महज उप–उत्पाद हैं जिनका निर्माण हिंदू आरक्षण व्यवस्था में असमान वितरण व वितरणशून्यता की स्थिति को अटूट रखने के लिये ही किया गया था। सदियों से दलित दरिद्रता की करुण मूर्ति इसलिये बन कर रह गये कि डॉ. अंबेडकर के पूर्व किसी भी वितरणशून्यता के खिलाफ कर्मसूची नहीं बनाया।

आज सामाजिक चेतना के प्रसार को प्रधानता देने वाले बुद्धिजीवियों से यह पूछे जाने का समय आ गया है कि **दलितों की वर्ण–व्यवस्था से उपजी प्रधान समस्या सामाजिक मर्यादाहीनता है या भूमि, व्यवसाय–वाणिज्य, मीडिया इत्यादि में वितरणहीनता ?** अगर वितरणहीनता कोई समस्या है तो उससे मुक्ति के लिये बसपा से बेहतर उनके पास क्या विकल्प है ? अगर मुलायम सिंह यादव संघ के सबसे बड़े विरोधी हैं तो संघ को रोकने के लिये 1999 में सोनिया को समर्थन देकर क्यों नहीं कुर्बानी दी और आज भी संघ को रोकने के लिये क्यों नहीं मायावती की मुख्यमंत्री बनाने के लिये सामने आ रहे हैं ? यह भी उनसे पूछा जाना चाहिये कि दलित मुक्ति की तीसरा चार्टर आफ मैग्नाकार्टा अर्थात भोपाल घोषणा मध्य प्रदेश सरकार की भांति दूसरी सरकारें अगर लागू नहीं करती हैं तो वैसे में दलितों को क्या करना होगा ?

सामार : राष्ट्रीय सहारा 11 अप्रैल 2002
पृष्ठ सं. 157 से 162 तक
वर्ण व्यवस्था एक वितरण व्यवस्था
एच.एल. दुसाध

संत रैदास और भारतीय संविधान

उपलब्ध ऐतिहासिक एवं खुदाई विभाग से प्राप्त सामग्री के आधार पर मालूम होता है कि जब मानव ने अपने चरण सभ्यता की सीमा में रखे अर्थात् संस्कृति के स्तर से ऊपर उठकर सभ्यता के स्तर पर दिखलाई पड़ा, कानून–निर्माण की आवश्यकता महसूस की गई। हम्मूरबी द्वारा बना कानूनी दस्तावेज इस बारे में प्रमाण के रूप में पेश किया जा सकता है। इससे पहले की क्या स्थिति रही, निश्चित रूप से कहना कठिन है।

कभी ये कानून लिखित रूप में रहे और कभी रस्मों–रिवाजों के रूप में। कानून–निर्माण कार्य अनेकों चरण पर कर आधुनिक स्तर पर पहुंच गया है। यह दिखलाई पड़ता है कि इतिहास क्रम मे कानून–निर्माण का उद्देश्य कभी मानव को बिना किसी भेदभाव के सुव्यवस्थित बनाये रखना रहा, कभी किसी वर्ग का पक्ष लेना रहा तथा कभी किसी समाज का शोषण करना रहा। कभी किसी समाज को असीमित सुख पहुंचाया गया, तो कभी किसी समाज से इन्सानी हकों तक को भी छीन लिया गया। किसी को जाति के नाम पर किसी को रंग–भेद नीति के आधार पर सताया गया अर्थात् जब भी समता के सिद्धांत को भंग किया गया, तो मानव का खूब शोषण हुआ। उसे अनेकों जुल्मों को भोगना पड़ा। बिना वजह बेसुमार अत्याचारों का सामना करना पड़ा।

संत रैदास के जीवन काल में यही स्थिति उस समाज की थी, जिसे आज दलित या अछूत कहा जाता है। भले ही उस समय देश का कोई संविधान नहीं था। लेकिन समाजिक व्यवस्था ने जिन रस्मों–रिवाजों को जन्म दिया, जो चाल–चलन सिखाया, जिन रूढ़ियों व कुप्रथाओ को जन्म दिया, उसका शासन किसी कानूनी प्रारूप से अधिक शक्तिशाली था। संत रैदाास के काल में सामाजिक व्यवस्था का आधार जाति–पांति था। जाति–पांति के चाल–चलन के कारण अछूत समाज के साथ बात–बात पर भेदभाव होता था कदम–कदम पर ऊँच–नीच का घिनौना बर्ताव होता था। बिना किसी कारण के अनेकों जुल्मों को सहना पड़ता था। उन पर बेशुमार जुल्म ढाये जाते थे। जाति के कारण कोई पूजनीय था और कोई निदंनीय। इन्सानियत को कदम–कदम पर बेइज्जत होना पड़ता था। व्यक्ति को जीवन का विकास करने के असीमित अवसर प्राप्त थे। जबकि दलित समाज के जीवन में शायद ही कोई ऐसा समय हो कि जबकि उसे अनेकों बाधाओं व जुल्मों का मुकाबला करना न पड़ा हो। दलित समाज की हालात जाति–पांति के कारण दयनीय बन गई थी, लेकिन फिर भी किसी को दया नहीं आती थी।

ऐतिहासिक क्रम मे घटनाओं की जानकारी यह बताती है कि केवल इने–गिने व्यक्ति ही इतना साहस, शील व प्रज्ञा बटोर पाते हैं कि जो सामाजिक व्यवस्था के अमानवीय चाल–चलन से टकराने का श्रेय हासिल कर सकें। जो समाज के जीवन को कुप्रभवित करने वाले कानूनों, रस्मों–रिवाजों और तौर तरीकों को संघर्षपूर्ण चुनौती दे सकें। जिनके व्यक्तित्व का विकास इतना सबल व सूक्ष्म था कि बड़े से बड़े जुल्म को ललकारा। भगवान बुद्ध दुनिया के पहले युग पुरूष थे, जिन्होंने सामाजिक व्यवस्था द्वारा रचे गैर इन्सानी रस्मों–रिवाजों व कानूनों का नाश करने में अद्भुत सफलता प्राप्त की। उनके बाद इसी कार्यक्रम में हिस्सा लेने वाले और कई महापुरूषों का आगमन समय–समय पर हुआ। जिनमें से संत रैदास एक हैं। कालचक्र की सीमाओं पर विजय प्राप्त करता चला रहा तथागत बुद्ध के ज्ञान की धारा का प्रवाह, जिसका प्रभाव रैदास जी के व्यक्तित्व पर पड़ा। इसी ज्ञान ने उन्हें संघर्ष के लिये प्रेरित किया। संत रैदास ने सामाजिक व्यवस्था में व्याप्त ऊँच–नीच, भेदभाव, व जात–पांत की कुप्रथाओं के खिलाफ एक बेमिसाल वीरतापूर्ण ढंग से जंग लड़ी। जाति–पातिं वाली व्यवस्थाओं के हर कानून के खिलाफ होने वाली लड़ाई के हर मौके पर जो कुर्बानी उन्होंने दी, वह पूरी तरह मानवता को समर्पित थी। उनकी बेमिसाल बहादुरी से भरा हर प्रयास इन्सानियत की सुरक्षा के हक में था। मौत से टकराने में सक्षम संत रैदास के इरादों की जानकारी हम उनकी वाणियों में पाते हैं। उनके दोहों से मालूम होता है कि जाति–पांति की बुनियाद पर बार–बार हमले हो रहे थे। संत रैदास के प्रादुर्भाव से लगभग 2000 वर्ष पूर्व तथागत के सम्यक् ज्ञान का प्रकाश हम उनकी वाणियों से प्राप्त करते हैं। समाज–व्यवस्था के खिलाफ जो जंग उन्होंने लड़ी। वह उनका संबंध गौतम बुद्ध की शिक्षा से जोड़ती है। साथ ही साथ समाज पर होने वाले शोषण के प्रति उनकी जागरूकता का बोध भी कराती है।

उनके पदों से साफ मालूम होता है कि जाति–पांति के कानूनों के कारण क्या–क्या दुख, मानव समाज को उठाना पड़ रहा था। दलित समाज किसी प्रकार का विकास नहीं कर सकता था। जाति–पांति के करण इस समाज की कैसी दुर्दशा बन चुकी थी। इस समाज से मानवीय अधिकारों को पूरी तरह छीना जा चुका था। जाति–पांति के शासन के दलित मानवीय अधिकारों को विशेष मुद्दा बनाकर जबर्दस्त आन्दोलन चलाये जाने की आवश्यकता अनुभव कर रहे थे। किसी भी जाति में जन्म के कारण कोई ऊँचा या नीचा माना जाये, ऐसे कानून की सख्त खिलाफत की जरूरत थीं

संत रैदास ने ऐसा ही किया। उन्होंने

जाति–पांति वाली व्यवस्था को खूब झंझोड़ा। जाति–पांति की हर तहजीब को उनके आन्दोलन ने ललकारा। गैर बराबरी व छुआछूत जैसे घिनौने रस्मों–रिवाजों के खिलाफ विद्रोह किया। जाति–पांति की किसी भी मान्यता को नहीं स्वीकारा। इस चली आ रही परम्परा को खुली चुनौती दी। उन्होंने अपने आन्दोलन के जरिये इन्सानी हकों के पक्ष में आवाज़ बुलन्द की। उनकी हर तकरीर समता, मैत्री व भाईचारा पर आधारित थी, जो भगवान बुद्ध की शिक्षा है। वे मानवीय अधिकारों की पुनः स्थापना के लिये अपने संघर्ष को पूरी शक्ति के साथ चलाते रहे। दलित समाज को इस बात से बार–बार आगाह करते रहे कि जाति–पांति वाली व्यवस्था है। उनके संघर्ष का मुख्य मुददा उन कानूनों की खिलाफत करना था, जो मानवीय अधिकारों को जब्त कर बैठे थे, जो समाज में दलित लोगों को इन्सानी जिंदगी बिताने तक की आज्ञा नहीं देते थे।

आज के आधुनिक युग में समाज–व्यवस्था पर संत रैदास जी के विचार आधुनिकतम कहे जायेंगे। ये विचार आज भी स्वागत योग्य हैं। आज कोई भी प्रगतिशील विचारक या राष्ट्र को प्रेम करने वाला ऐसा ही विचार रखता है। बोधिसत्व बाबा साहेब डॉ. अंबेडकर के नेतृत्व में बने भारतीय संविधान में मौलिक अधिकार अर्थात् मूलभूत मानवीय अधिकार का प्रयोजन इस बात का सबल प्रमाण है। हमारा संविधान भगवान बुद्ध की शिक्षा–समता, मैत्री व भाईचारा पर आधारित है। हमारा संविधान छुआछूत या गैर बराबरी की इजाजत नहीं देता है। दुनिया में आज शायद ही कोई संविधान हो जो मानवीय अधिकारों की गारन्टी न देता हो।

समाज–व्यवस्था का सुव्यवस्थित ढंग से चलाने के लिये भारतीय संविधान में मौलिक अधिकारों (मानवीय अधिकार) का प्रयोजन किया गया, ताकि गौतम बुद्ध की शिक्षा–समता, मैत्री व भाईचारा की भारतीय समाज में स्थापना की जा सके। इसलिये भारतीय संविधान जाति नस्ल, धर्म व रंग आदि के आधार पर आदमी और आदमी के बीच किसी भी प्रकार के भेद की शिक्षा नहीं देता। सभी मानव समान हैं, यह पाठ हमारा संविधान हम सबको पढ़ाता है। संत रैदास जी का आन्दोलन भी यही शिक्षा देता है कि सभी मानव एक समान हैं। किसी भी प्रकार का भेदभाव जाति के आधार पर नहीं मानना चाहिये। वे अपने संघर्षपूर्ण पूरे जीवन में आखिरी सांस तक यह प्रयास करते रहे। समता, मैत्री व भाईचारा की स्थापना हो, यह ही समाज–व्यवस्था का आधार रहे। इस प्रकार हम पाते हैं कि भाईचारा की स्थापना हो, यह ही समाज–व्यवस्था का आधार रहे। इस प्रकार हम पाते हैं कि भारतीय संविधान का निर्माण और संत रैदास का आन्दोलन, दोनों पर ही भगवान बुद्ध की शिक्षा का प्रभाव रहा। इसलिये दोनों में एक ही उद्देश्य निहित है। दोनों में समाज के विकास की दिशा एक ही मिलती है। कानूनी दृष्टि से समाज–व्यवस्था पर संत रैदास जी के विचार और भारतीय संविधान की रूप रेखा में समानता है। अर्थात् कानूनी दृष्टि में भी संत रैदास के विचार बहुत ही प्रगतिशील व आधुनिक रहे। उनका आन्दोलन कानूनी दृष्टि से कल्याणकारी व मानवतावादी रहा।

सामार : संत रैदास की मूल विचार धारा
श्याम सिंह
पृष्ठ सं. 109 से 111 तक

क्या ब्राह्मण भोज, ब्राह्मण को दान देने से ही पाप से मुक्ति संभव है ?

कभी कभी मन में विचार उठता है कि जिस भारत ने द्रविड़, आर्य, हिंदू, बौद्ध और जैन धर्मों और संस्कृतियों को जन्म दिया, जहां सदा ही नैतिकता व सद्गुणों पर जोर दिया गया, वह भारत आज ऐसा भ्रष्ट और बेईमान क्यों हो गया है ? धर्मकर्म की सब से ज्यादा चर्चा इसी देश में, खास इस हिंदू समाज में, मिलेगी। लेकिन यह भी सत्य है कि सब से ज्यादा भ्रष्ट और बेईमान किस्म के लोग भी भारत में ही है।

आप देखेंगे कि बड़े–बड़े पूंजीपति, लखपति, व्यापारी और ठेकेदार एक ओर तो बेईमानी से जनता का खून चूसने और तिजोरी भरने में जुटे हुये हैं और दूसरी और ब्राह्मणों की सेवा करने में भी सब आगे हैं।

उनके द्वार पर भागवत की कथा होती है, रामायण पाठ होता है, कीर्तन और प्रवचन चलते रहते हैं। लाउडस्पीकार दिनरात उनकी धर्मपरायणता का प्रचार करता रहता है। कथावाचक हलवापूड़ी उड़ाते हैं। भांग छानते हैं और गले में गजरा डाल कर महिला श्रोताओं को भगवान श्रीकृष्ण की रासलीलाओं और चीरहरण की कथा सुनाकर कृतार्थ करते हैं। सत्यनारायण की कथा, ब्राह्मण भोजन और ब्राह्मणों को दानदक्षिणा चलती रहती है।

यह भी सही है कि बड़े व्यापारी और बड़े अधिकारी जितने बड़े पैमाने पर बेईमानी कर रहे हैं, छोटे अधिकारी और कर्मचारी तथा छोटे व्यापारी भी तुलनात्मक दृष्टि से छोटे पैमाने पर भ्रष्टाचार और मुनाफाखोरी में जुटे हुये हैं। बड़े माने जाने वाले धार्मिक नेता और महात्मा भी स्वार्थों के झंडे गाड़े हुये हैं। गद्दी, पद, अधिकार और ऐश्वर्य प्राप्ति के लिये भी – फिर चाहे वह साधारण मठ की गद्दी हो या शंकराचार्य की पीठ – जब उठापटक, जालसाजी और षड्यंत्र हो सकता है तो भला इस से ज्यादा स्वार्थपरता और पतन क्या होगा! धार्मिक नेताओं और साधुओं ने राजनीति में घुस कर सांप्रदायिकता, जातिवाद, तोड़फोड़ और ऊँचनीच की भावना जैसे दुर्गुणों को बढ़ाने में और ज्यादा योगदान किया है।

सवाल यह है कि धर्मकर्म की इतनी बातें करने पर भी भारतीय इतने अधिक बेईमान क्यों हो गये हैं ? पाप और अत्याचार करते समय इनका हृदय क्यों नहीं कांप उठता ?

इस प्रश्न का उत्तर बहुत ही सीधा और सरल है। ब्राह्मणों ने अपने और अपनी भावी पीढ़ी के बालबच्चों का पेट पालने के लिये ऐसी ऐसी व्यवथायें कर रखी हैं कि लोगों को पाप कर्मों से मिलने वाले दंड का कोई डर ही नहीं रह गया है। स्वर्ग–नरक की कल्पना के पीछे उद्देश्य यह था कि स्वर्ग के अनंत सुखों का लालच दिखाकर लोगों को सतकर्मों की ओर प्रेरित किया जाये।

दुष्कर्मों की ओर लोगो को विमुख करने के उद्देश्य से ही दुष्कर्मों के लिये दंडस्वरूप, इस लोक और परलोक में, मिल सकने वाली कठोर ओर दारूण यातनाओं का डर दिखाया गया। उन्हें भयभीत किया गया ताकि वे पापकर्मों से दूर रहें। नरक की कल्पना इस कारण ही की गई थी। लेकिन ब्राह्मण वर्ग ने जिस का शास्त्रों की रचना, प्रचार प्रसार और व्याख्या पर उन दिनों एकाधिकार था, नारकीय दुखों की कल्पना से भयभीत जनता में इस प्रकार का फतवा देकर कि अमुक वस्तु ब्राह्मण को दान करो, पाप से मुक्ति मिल जायेगी और स्वर्ग में स्थान रिजर्व हो जायेगा। अपने लिये दानपुण्य की व्यवस्था करा ली।

दरअसल व्यापारियों और यजमानों द्वारा बेईमानी से कमाई गयी धनराशि और सुख ऐश्वर्य का एक अंश खुद के लिये प्राप्त करने के उददेश्य से ब्राह्मणों ने पाप से बचने के अनेक उपाय प्रायश्चित स्वरूप सुझाव दिये, जिनमें मुख्य रूप से ब्राह्मणों को दान दक्षिणा देना ही है।

पाप से छुटकारा पा जाने के तरीके को आसान बना देने के कारण ही हिंदू जनता पाप के दंड की ओर से भयभीत न हो सकी और हिंदू समाज भ्रष्ट, पापी और बेईमान होता चला गया। पाप कितना भी बड़ा क्यों ने हो, यहां रामनाम लेने से या ब्राह्मण को सोनाचांदी और गऊदान कर देने से या गंगा में डुबकी लगा लेने मात्र से छुटकारा मिल जाता है।

जब पाप से इतनी सस्ती कीमत पर मुक्ति मिल जाती है तो पापकर्मों के लाभों, सुखों, भोगों और खुशहाली को क्यों छोड़ा जाये। पाप और बेईमानी से एक लाख कमाओ और गऊदान के नाम सौ रूपये ब्राह्मण को दान कर जितने रोयें उस गाय के शरीर में हैं, उतने वर्षों तक स्वर्ग में गुलछर्रे उड़ाने का अधिकार प्राप्त कर लो।

'देवी भागवत पुराण' में यमराज और सावित्री का विस्तृत वार्तालाप हैं जिसमें बताया गया है कि स्वर्ग और नरक किस को और कैसे मिलते हैं। उससे मालूम होगा कि स्वर्ग और नरक भेजना ब्राह्मण के हाथ की बात हैं। उसे जो खुश कर दे वह स्वर्ग चला जायेगा। जो खुश नहीं कर सकेगा, वह नरक की यातनायें भोगेगा।

धर्मराज यह उपाय बताते हैं अपने धर्म में संलग्न रहने वाले ब्राह्मण स्वधर्मनिरत विप्र को अपनी कन्या देने के फलस्वरूप लोग चन्द्रलोक को जाते हैं। यदि कन्या को अलंकृत कर के दान में दिया जाये तो उससे दुगुना फल प्राप्त होता है। उन साधु पुरूष (दानदाता) में यदि कामना हो तो वे चंद्रमा के लोक में जाते हैं। यदि निष्काम भाव से दान करें तो भगवान विष्णु के परमधाम में पहुंच जाते हैं।

देखिये चंद्रलोक और विष्णुलोक में प्रवेश पाना है तो कितना सरल उपाय पौराणिकों ने बना दिया है।

आगे लिखा है कि " दूध, चांदी, सुवर्ण, वस्त्र, घृत, फल और जल ब्राह्मणों को देने वाले पुण्यात्मा पुरुष चंद्रलोक में जाते हैं और एक मन्वंतर तक वे वहां सुविधापूर्वक रहते हैं। उस दान के प्रभाव से उन्हें उत्तम स्थान में निवास प्राप्त होता है। पवित्र ब्राह्मण को सुवर्ण, गौ और ताम्र दान वाले सत्पुरूष सूर्यलोक में जाते हैं। वे भयबाधा से मुक्त हो उस विस्तृत लोक में सुदीर्घ काल तक निवास करते हैं।"

इतना ही नहीं यमराज आगे कहते हैं, " जो ब्राह्मणों को पृथ्वी अथवा प्रचुर धन दान करता है वह भगवान विष्णु के परम सुंदर श्वेतद्वीप में जाता है और दीर्घ काल तक वहां निवास करता है मुने! वह भाग्यवान पुरुष भगवान के उस विशाल लोक में विपुलवास प्राप्त करता है। भक्तिपूर्वक ब्राह्मण को गृहदान करने वाले पुरूष भगवान विष्णु के सुखदायी लोक में दीर्घकाल के लिये प्रस्थान करते हैं। भगवान श्रीहरि का वह विशाल लोक महान व श्रेष्ठ है। वे उस लोक में उतने दिनों तक रहते हैं, जितनी संख्या में उस दान दिये गये गृह के रजकण है। मनुष्य जिस देवता के उद्देश्य से गृहदान करता है। अंत में उसी देवता के लोक में जाता है। अपने घर में दान करने की अपेक्षा राजभवन पर जाकर दान करने से चौगुना, पवित्र तीर्थ में दान करने से सौ गुना तथा किसी श्रेष्ठ स्थान में दान करने से दो गुना फल मिलता है। यह ब्राह्मणजी का वचन है "

लीजिये अब और क्या करना चाहिये आप को। यदि विष्णुजी के पास रहना है तो उनका नाम लेकर ब्राह्मण को एक मकान दान कर दीजिये, राम या कृष्ण के पास रहना है तो दान करते समय उनका नाम ले लीजिये और ज्यादा से ज्यादा बड़ा मकान बना लीजिये, क्योंकि उसकी ईटों की गिनती कर उतने दिन आप को स्वर्ग में रहने का पासपोर्ट दिया जायेगा।

बात यही समाप्त नहीं होती आगे लिखा है ब्राह्मणों और देवताओं को दिया हुआ दान समान फल प्रदान करता है। जो पूर्व जन्म में दिया गया है। वहीं

जन्मांतर में प्राप्त हो सकता है। पुण्यवान पुरूष स्वर्गीय सुख भोग कर भारतवर्ष में जन्म पाता है। उसे क्रमशः उत्तर से उत्तम ब्राह्मण कुल में जन्म लेने का सौभाग्य प्राप्त होता है। पुण्यवान ब्राह्मण स्वर्ग सुख भोगने के अनंतर पुनः ब्राह्मण ही होता है।

इस प्रकार की मोटी मोटी बातें बताने के बाद यमराज जी ने छोटे छोटे दानों की चर्चा करते हुये सावित्री से कहा, " पतिव्रते, ब्राह्मण को अन्नदान करने वाला पुरूष शिवलोक में जाता है और दान किये हुये अन्न में जितने दान होते हैं उतने वर्षों तक वह कहां निवास पाता है। यदि ब्राह्मण को आसन दान दिये जाये तो हजारों वर्षों तक भगवान विष्णु के लोक में रहने की सुविधा प्राप्त हो जाती है। जो पुरूष ब्राह्मण को दूध देने वाली गाय (दूध नहीं देने वाली बुढढी या बेकार गाय नहीं) दान करता है वह गाय के शरीर में जितने रोये हैं उतने वर्षों तक उस लोक में प्रतिष्ठित रहता है।

जो मानव भारतवर्ष में रहकर भक्तिपूर्वक ब्राह्मणों को गौ दान करता है वह हजारों वर्षों तक चंद्रलोक में रहने का अधिकारी बन जाता है। ब्राह्मण को सुंदर स्वच्छ छत्र दान करने वाला व्यक्ति हजारों वर्षों तक वरुण लोक में आनंद करता है। जो दुखी ब्राह्मण को दो वस्त्र प्रदान करता है, उसे दस हजार वर्ष तक वायुलोक में प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। वस्त्र सहित शलिग्राम को ब्राह्मण के लिये अर्पण करने वाला पुण्यात्मा पुरुष बहुत लंबे समय तक बैकुंठ में आनंद करता है। मनोहर दिव्य शैय्या ब्राह्मण को देने से दीर्घकाल तक चंद्रलोक में प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

उपयुक्त संपूर्ण वार्तालाप में ब्राह्मण को दान देने का ही महत्व बताया गया है। यदि आप ने किसी अब्राह्मण को दान कर दिया तो उसका कोई फल नहीं मिलेगा। पौराणिकों के अनुसार महत्व दान का नहीं , ब्राह्मण को देने का है।

आगे और देखिये जो मनुष्य, ब्राह्मण को दान करता है, इंद्र की आयुपर्यंत उनके आधे आसन पर विराजमान होता हैं ब्राह्मण को घोड़ा देने वाला मनुष्य वरुण लोक में आनंद करता है यही फल ब्राह्मण को उत्तम पालकी देने पर होता है। ब्राह्मण को उत्तम बगीचा देने वाला व्यक्ति वायुलोक में प्रतिष्ठित होता है। जो ब्राह्मण को पंखा और सफेद चंवर अर्पण करता है। वह वायुलोक में सम्मान पाता हैं धन और रत्न दान करने वाला दीर्घायु और विद्वान होता है दान देने और लेने वाले, दोनों ही बैकुंठ में चले जाते हैं "।

ब्राह्मणों को कन्यादान लेने की बड़ी इच्छा रही है, इसलिये पुनः पृष्ठ 521 में लिखा गया है " जो सुयोग्य एवं सदाचार संपन्न कन्या को आभूषणों से अलंकृत करके, वस्त्र सहित, भार्या बनाने के लिये ब्राह्मण को अर्पण करता है, वह दीर्घकाल तक चंद्रलोक में प्रतिष्ठित होता है। तदनंतर उस का गंधर्वलोक में स्थान पाना सुनिश्चित है। उसके दिनरात सुखभोग में बीतते हैं, तत्पश्चात सहस्र जन्म में उसे सती, सौभाग्यवती, सुकुमारी एवं प्रिय भाषण करने वाली सुंदर स्त्री प्राप्त होती है। "

ब्राह्मणों ने किसी की कन्या को भार्या के रूप में प्राप्त करने के लिये लोगों को कितना लालच दिखाया है। ब्राह्मण को कन्या दे दो और सैकड़ों प्रकार के सुख भोग प्राप्त करों।

आगे लिखा है गया है " जो पुरुष अनेक द्रव्यों से संपन्न तथा भांतिभांति के धनधान्यों से भरेपूरे विशाल भवन ब्राह्मण को दान करता है, वह दीर्घकाल तक देवताओं के लोक में वास करता है। तत्पश्चात उत्तम योनि में जन्म पा कर महान धनवान होता है। "

इसी प्रकार के फल ब्राह्मणों को हरीभरी खेती से युक्त सुंदर भूमि, उत्तम गौशाला, उत्तम गांव, श्रेष्ठ नगर आदि दान करने पर भी प्राप्त होने का वर्णन है। स्वर्ग में स्थान प्राप्त करना है तो ब्राह्मण को दान दो। जो भी बन सके वही दे दो। जहां ब्राह्मण को प्रसन्न करने पर स्वर्ग में स्थान मिलने का वर्णन है, वहीं ब्राह्मण को नाराज करने या सताने पर नरक प्राप्त होने पर खतरा भी बताया गया है।

छियासी नरक कुडों का विवरण देते हुये यमराज ने सावित्री से कहा, " जो मूर्ख मनुष्य घर में आये हुये भूखे प्यासे दुखी ब्राह्मण को भोजन नहीं देता, वह सप्तकुंड नामक नरक में जाता है, दुखप्रद नरक में निवास करने के बाद वह सात जन्मों तक पक्षी होता है। अपने अथवा दूसरे के द्वारा उपलब्ध हुई ब्राह्मण और देवताओं की वृत्ति को छीनने वाला व्यक्ति विटकुंड नामक नरक में जाता है, पुनः पृथ्वी पर आकर ही विष्ठा के कीड़े की योनि में रहता है। यदि ब्राह्मण को दी हुई फिर दूसरे को दी जाये तो उस दूषित कर्म के प्रभाव से दाता को वासाकुंड नामक नरक में जाना पड़ता है। तदनंतर उसे सात जन्मों तक गिरगिट बनना पड़ता है। जो गुरू अथवा ब्राह्मण को मारकर उनके शरीर से रक्त बहा देता है, उसे असृककुंड नामक नरक की प्राप्ति होती है। उसमें रहकर वह रक्तपान करता है। तदंतर सात जन्मों तक वह बाद्य होता है।

" जो दंड न देने योग्य व्यक्ति को अथवा ब्राह्मण को दंड देता है वह वज्रदंष्ट्र नामक नरककुंड में जाता है। उसमें कीड़े ही कीड़े रहते हैं। उसे कीड़े खाते हैं और वह हाहाकार मचाया करता है। फिर वह सात जन्मों तक सुअर और तीन जन्मों तक कौआ होता है "

इस व्यवस्था के द्वारा ब्राह्मणों ने मनमानी करने और दंड न पाने की सुविधा प्राप्त कर ली थी। आज के दंडाधिकारियों को सावधान रहना चाहिये और जान लेना चाहिये कि यदि उन्होंने ब्राह्मण को दंडित किया तो उनकी क्या दुर्गति होगी।

और आगे देखिये " जो ब्राह्मण का स्वर्ण चुराता है, वह मंथानकुंड नामक नरक में जाता है। मेरे दूत उसकी आंखों पर पट्टी बांध कर डंडों से उस पर प्रहार करते हैं। उसके बाद वह तीन जन्मों में नेत्रहीन और सात जन्मों में दरिद्र होता है। तांबे और लोहे की चोरी वाला बीजकुंड नामक नरक में जाता है। जो ब्राह्मण की खेती, तांबूल, आसन और शैया का अपहरण करता है वह पापी मानव चूर्णकुंड नरक में जाता है। गौओं और ब्राह्मणों के प्रति क्रूर दृष्टि रखने वाला मनुष्य दीर्घ काल तक वक्रकुंड नरक में रहता है। सात जन्मों तक अंगहीन मनुष्य बनता है। दरिद्रता उसे घेरे रहती है। "

और सब से जोरदार पौराणिकों ने यह लिखी है कि ब्राह्मणों का चरणोदक और शालिग्राम का जल एक समान पवित्र है, जो इनमे भेद मानता है, उसे ब्रह्महत्या लगती है। जो ब्राह्मण को देख कर प्रणाम नहीं करता उसे गौहत्या लगती है।

इस प्रकार अनेक बातों पौराणिकों ने लिखकर ब्राह्मणों की स्वर्ग नरक का ठेकेदार बना दिया है।

सामार : कितने खरे हमारे आदर्श
सं. राकेश नाथ
पृष्ठ सं. 326 से 331 तक

संत नारायण गुरु के परिनिर्वाण दिवस पर हार्दिक श्रृद्धांजलि

द्रविड़ डिफेन्स वर्कर्स यूनियन आयुध उपस्कर निर्माणी के सदस्य बने

द्रविड़ भारत को मजबूत करें।

निवेदक : दयानन्द चौधरी

जनरल फिटर ओ.ई.एफ. रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

विचार विचरण – 20

क्या फर्ज़ है कि सबको मिले एकसा जवाब
आओ न हम भी सैर करें कोहे-तूर की ।

भारतीय डाक
India Post

(कोहे-तूर पर्वत पर हज़रत मूसा (Prophet Moses) जब परम प्रभू की ज्योति देखने को गये-उनको आकाशवाणी सुनाई दी कि तुम ज्योति को देख नहीं सकते-भाव तुममें शक्ति नहीं-पर-स्वयं को इसके काबिल समझते हुए ग़ालिब कहते हैं कि-क्या ज़रूरी है कि सबको वही जवाब मिले-चलो हम भी उस पर्वत की सैर करें)

एक कहानी – प्राचीन भारत में मान्यता थी कि यदि कोई राजा चक्रवर्ती हो जाए तो वह स्वर्ग स्थित मेरू पर्वत पर
अपना नाम लिखने का अधिकारी हो जायेगा-जो सदैव रहेगा ।
ऐसा ही एक चकवर्ती राजा स्वर्गद्वार पर पहुँचा और मेरू पर्वत की तरफ बढ़ा।
वहाँ जमी भीड़ देखकर उसने हैरानीवश द्वारपाल से इसका कारण पूछा
"ये सभी चक्रवर्ती राजा हैं और वहीं अपना नाम लिखने के लिए आतुर हैं"
बारी आने पर वह यह देखकर हैरान हुआ कि वहाँ कोई स्थान खाली ही न था
वह इस दुविधा में पड़ गया-कि वह अपना नाम लिखे तो लिखे कहाँ ?
उसको एक आवाज सुनाई दी
"किसी दूसरे का मिटाकर आप अपना नाम लिख दो'
"फिर तो किसी दिन कोई मेरा नाम भी मिटा सकता है" राजा ने सोचा
"यही विधि का विधान है" – आवाज़ फिर आई
विभागीय परिपेक्ष्य में इस कहानी के सार को सांकेतिक तौर पर लेते हुए
मैने भी आम नागरिकों की दुविधाओं को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर विभाग द्वारा संचालित बीमा योजनाओं-
PLI & RPLI के महत्वपूर्ण पहलुओं को उनके सम्मुख रचाने का प्रयास किया है।
बीमा क्षेत्र ऐसा क्षेत्र है जिसके बारे में नागरिकों को आम तौर पर
उपयुक्त जानकारी का अभाव पाया जाता है।
डाक निदेशालय स्तर पर किया गया सर्वे दर्शाता है कि देश भर में योग्य ग्राहकों में से
केवल 29% डाक बीमा योजनाओं के धारक बने हैं।
बाकी 71% उपरोक्त कहानी में वर्णित चक्रवर्ती राजा की भाँति इस दुविधा में हैं कि
बीमाधारक के तौर पर यदि वह अपना नाम लिखायें तो लिखायें कहाँ ?
भाव यह कि
उपलब्ध बीमा योजनाओं में से तुल्नात्मक तौर पर उनके हित में सबसे लाभदायक कौन हैं?
मेरा सुझाव है कि डाक विभाग द्वारा संचालित बीमा योजनाएं सबसे बेहतर हैं।
जिनमें देय मासिक प्रीमियम सबसे कम और देय सालाना बोनस सबसे अधिक है – स्वयं देखें

Name of Policy	Bonus (PLI) per thousand per year (Rs.)		Bonus (RPLI) per thousand per year (Rs.)	
Whole Life Assurance	90/-	केवल सरकारी व अर्ध सरकारी कर्मियों के लिए	65/-	केवल ग्रामवासियों के लिए
Endowment Assurance	65/-		50/-	
Anticipated Endowment Assurance	60/-		47/-	

स्मरण रहे कि डाक विभाग अन्य बीमा उपक्रमों की अपेक्षा सबसे अधिक बोनस दे रहा है
पर फिर भी
कानपुर डाक परिक्षेत्र में ग्रामीण डाक जीवन बीमा योजना के पॉलिसी धारकों का
घनत्व उपलब्ध ग्राहकों के अनुपात में बहुत ही नगण्य है
इसके दो ही कारण हो सकते हैं –
पहला : ग्रामवासियों को इसकी (RPLI की) विस्तार में जानकारी का न होना
दूसरा : ग्रामीण क्षेत्र के डाक कर्मियों (GDSs) द्वारा इसकी जानकारी उन तक न पहुँचाना
ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत सभी डाककर्मियों को पुनः आपसे मिलने के आग्रह के साथ ही
मेरे विचार में आया किमैं आपसे सीधा संवाद क्यूँ न करूं?
आपकी जानकारी के लिए मैं यह बताना चाहूँगा कि
PLI एवं RPLI योजनाओं के तहत आप क्रमशः 20 लाख और 5 लाख रुपयें तक का बीमा करवा सकते हैं।
इन योजनाओं में पासबुक, नामांकन व लोन लेने की सुविधा भी है
अब यह सुनहरा मौका है कि आप अतिशीघ्र इनके धारक बनें
सो मेरी आपसे गुज़ारिश है कि
कम आयु में बीमा धारक बनें-कम प्रीमियम दें-ज्यादा से ज्यादा बोनस पायें
कृपया शीघ्र अपने शाखा डाकपाल से सम्पर्क करें
असुविधा होने पर निरीक्षक डाकघर महोबा, श्री चन्द्र मो. नं. 9450726358 या
अधीक्षक डाकघर बाँदा श्री एस.के. सिंह, मोबाईल नं. 9307631294, दूरभाषा संख्या 05192-224741 से सम्पर्क कर सकते हैं
शुरू के उद्धृत उर्दू दोहे में इंगित भावना के तहत ही मैंने आपसे सीधे अनुरोध किया है
डाकघर सदैव आपकी सेवा में

अकेले पार उतरकर भी बहुत उदास हूँ मैं
मैं उनका बोझ उठाकर भी तैर सकता था ।

कर्नल सुखदेव राज
पोस्टमास्टर जनरल कानपुर परिक्षेत्र
दूरभाष नं. : 0512-2332370

खास आपके लिए

भारतीय डाक
India Post

Stray Thought - 13

क्यों न बाग की कुछ कलियाँ ही खिलाता जाँऊँ
एक झोंका हूँ बहरहाल मुझे गुज़र ही जाना हैं ।

सेवा में,

नाम .....

पता .....

.....

.....

ग्रामवासियों के चौमुखी विकास एवं उन्नति के लिए
भारत सरकार ने समय–समय पर विभिन्न
प्रकार की योजनाएं लागू की हैं ।
जिनमें से कुछेक का संचालन डाक विभाग कर रहा है।
जिनकी जानकारी यूँ तो आप सभी को है पर चूँकि इन सेवाओ का घनत्व
मौजूदा आबादी के लिहाज से नगण्य है ।
सो मैने सोचा कि मैं आप से सीधा संवाद क्यूँ न करूँ ?
मोटे तौर पर डाकघर के माध्यम से जो योजनाएं संचालित की जा रही है उनका ब्योरा एवं
उनसे होने वाले लाभ उनके सम्मुख अंकित हैं ।

1	MIS (मासिक आय योजना) में 8.5% ब्याज	ब्याज का मासिक भुगतान
2	SCSS (वरिष्ठ नागरिक बचत योजना) में 9.30% ब्याज	ब्याज का त्रैमसिक भुगतान और नामांकन की सुविधा मिलेगी
3	RD (आवर्ती खाता 8.4% ब्याज)	8.4% ब्याज की दर से 5 वर्षो में एक आकर्षक धनराशि मिलेगी
4	TD (समयावधि खाता)	1–वर्षो में 8.2, 2–वर्ष में 8.3, 3–वर्ष में 8.4 एवं 5 वर्ष में 8.50% ब्याज
5	NSC (राष्ट्रीय बचत पत्र)	5–वर्ष में 8.60% ब्याज एवं 10 वर्ष में 8.90% चक्रवृद्धि ब्याज
6	PLI (डाक जीवन बीमा)	औरों से कही कम प्रीमियम–अधिक बोनस–परिपक्वता राशि औरों से कहीं अधिक
7	RPLI (ग्रामीण डाक जीवन बीमा)	ग्रामवासियों के लिए भारत सरकार की अनूठी योजना–सभी सुविधाएँ PLI की तरह
8	NPS (न्यू पेंशन स्कीम)	बुढ़ापे को खुशहाल, चिन्तामुक्त बनाने के लिए भारत सरकार कर विशेष योजना
9	SPEED POST (स्पीड पोस्ट) पत्र प्रेषण की द्रुतगामी सेवा	पूरे देश में कहीं भी 50 ग्राम तक 25 रु. में लोकल 12 रु. में
10	e-MO (इलेक्ट्रानिक मनीआर्डर)	देश में कहीं भी चन्द मिनटों में आप पैसा भेजें–उसी दिन भुगतान

सो मेरा आपसे आग्रह रहेगा कि यदि आप चाहते है कि

बच्चों में बचत की आदत पड़े–उनका भविष्य बेहतर हो–तो कृपया उनका (RD) आवर्ती खाता तुरंत खुलवाएं ।
आपका संचित धन आपको माहवार आमदनी दे और बढ़े भी तो–कृपया (MIS) मासिक आय योजना अपनाएं ।
आपको सरकारी कर्मियों की भांति माहवार पेंशन मिले तो–कृपया जिले के प्रधान डाकघर से (NPS) न्यू पेंशन स्कीम लें ।
औरों की तुलना में कम प्रीमियम ज्यादा लाभांश एवं जीवन सुरक्षा मिले–तो डाक जीवन बीमा/ग्रा.डा.जी.बी. अपनाएं ।
रोजाना की बचत को रोजाना ही संचित करना है तो कृपया (SB) बचत खाता खुलवाएं ।
आपका संचित धन एक मुश्त बढ़े तो–कृपया TD (समयावधि खाता) खुलवाएं ।
आपका संचित धन एक निश्चित समयावधि में बढ़े तो–कृपया (NSC) राष्ट्रीय बचत पत्रों में निवेश करें ।
आपके विदेश में कार्यरत परिजनों द्वारा भेजा पैसा तुरंत मिले तो–कृपया डाकघर पधारें ।
आपको अपने संबंधियों को जल्द पैसा भेजना हो तो–कृपया (eMO) इलेक्ट्रानिक मनीआर्डर की सुविधा लें ।

मेरे कहने का सार यह है कि डाक विभाग द्वारा दी जा रही
उपरोक्त सुविधायें अन्य संस्थाओं द्वारा दी जा रही सेवाओं
की तुलना में
कहीं बेहतर, कहीं सस्ती और पूर्णतः सुरक्षित एवं भरोसेमंद हैं
किसी भी प्रकार का कोई जोखिम नहीं है
आपसे अनुरोध है कि
आप अपना एवं परिवार का उज्जवल भविष्य सुनिश्चित करने हेतु इनके धारक बनें

असुविधा होने पर कृपया अपने क्षेत्र के निरीक्षक डाकघर, महोबा (उत्तर)
श्री चन्द्र प्रकाश मो. नं. 9450726358 से सम्पर्क करें

डाकघर आपकी प्रतीक्षा में है

खास आपके लिए

सीख ले फूलों से ग़ाफ़िल मुद्दा–ए–ज़िंदगी
ख़ुद महकना ही नहीं, चमन को महकाना भी है ।

कर्नल सुखदेव राज
पोस्टमास्टर जनरल, कानपुर क्षेत्र
मो. : 9453045955